JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक विद्यालयों के छात्रो, शिक्षकों और प्रधानाध्यापक की अभिवृति एवं जागरूकता का अध्ययन

[1]रूबी कुमारी, [2]डॉ बिनय कुमार
[1]शोधार्थी, रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड
[2]शोद्य निदेशक, रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड

सारांश

समावेशी शिक्षा समाज में विविधता और समरसता को बढ़ावा देती है। इसका मुख्य उद्देश्य सभी छात्रों को समान अवसर और समर्थन प्रदान करना है, जिससे समानता की भावना बढ़ती है। इसमें शिक्षा को अनुकूलित करना, विभिन्न संसाधनों का उपयोग करना, और समृद्ध सामाजिक परिवेश को शामिल करना शामिल है। यह छात्रों के बीच समर्थन, सम्मान, और सहयोग को बढ़ावा देती है, जिससे उन्हें स्वीकार्यता का एहसास होता है और अपने पूरे पोटेंशियल को प्राप्त करने में मदद मिलती है। समावेशी शिक्षा छात्रों को शैक्षिक लाभ प्रदान करने के साथ-साथ समाज में समरसता और समानता की भावना को भी बढ़ावा देती है। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर विविधताओं को समर्थित करना है। इसमें सामूहिक शिक्षा, अनुप्रयोगिक शिक्षा उपकरणों का उपयोग, और छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं का ध्यान रखना शामिल है। इसके साथ ही, छात्रों के बीच समर्थन, सम्मान, और सहयोग को बढ़ावा देना भी महत्वपूर्ण है। समावेशी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है छात्रों के बीच समर्थन, सम्मान, और सहयोग को बढ़ावा देना। इससे छात्रों को स्वीकार्यता का एहसास होता है और उन्हें अपने अंतर को समझने में मदद मिलती है। समावेशी शिक्षा छात्रों को शैक्षिक लाभ प्रदान करने के साथ-साथ समाज में समरसता और समानता की भावना को बढ़ावा देती है। इससे समाज को एक सही और संवेदनशील दिशा मिलती है, जहां सभी को समान अवसर मिलते हैं और हर कोई अपने पूरे पोटेंशियल को प्राप्त कर सकता है। यह शिक्षा प्रणाली समृद्धि, सामाजिक समरसता, और समावेशी विकास की दिशा में कार्य करती है। इस अध्ययन के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा में समावेशी शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों की अभिवृत्ति का मूल्यांकन किया जाएगा।

महत्वपूर्ण शब्द: समावेशी शिक्षा, प्राथमिक विद्यालय, शिक्षक, अभिवृत्ति, सुधार, सामाजिक समरसता।

प्रस्तावना

समावेशी शिक्षा एक महत्वपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया है जो समाज में विविधता और समरसता को बढ़ावा देती है। इस शैक्षिक उपक्रम का मुख्य उद्देश्य है सभी वर्गों, लिंगों, धर्मों, और शारीरिक-मानसिक स्थितियों के छात्रों को समान अवसर और समर्थन प्रदान करना। इसके माध्यम से, समाज में समरसता और समानता के प्रति जागरूकता बढ़ती है। समावेशी शिक्षा

के प्राथमिक माध्यमों में से एक शिक्षा को अनुकूलित करना, विभिन्न शैक्षिक संसाधनों का उपयोग करना, और समृद्ध सामाजिक-परिवेश को समावेशित करना शामिल होते हैं। इसके अलावा, समावेशी शिक्षा छात्रों के बीच समर्थन, सम्मान, और सहयोग को बढ़ावा देती है, जो उन्हें स्वीकार्यता का एहसास कराती है और उन्हें अपने स्वयं की स्थिति में महत्वपूर्ण अंतर को समझने में मदद करती है। समावेशी शिक्षा के माध्यम से, हम समाज को एक सही और संवेदनशील दिशा में ले जासकते हैं, जहां हर किसी को समान अवसर मिले और हर कोई अपने पूरे पोटेंशियल को प्राप्त कर सके। इस प्रकार, समावेशी शिक्षा न केवल छात्रों को शैक्षिक दृष्टिकोण से अधिकतम लाभ प्रदान करती है, बल्कि इससे समाज में समरसता और समानता की भावना को भी बढ़ावा मिलता है। शिक्षा मानव की समस्त स्वाभाविक शक्तियों का पूर्ण प्रगतिशील विकास है, और इसलिए शिक्षार्जन करने वाले बच्चे, सामान्य हों या विकलांग, को शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर प्राप्त होना न्याय संगत है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 में यह प्रावधान है कि 6 से 14 वर्ष के सभी बच्चों को अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जाए। हालांकि, प्राथमिक शिक्षा के सर्वव्यापीकरण के लक्ष्य की पूर्ति आंशिक रूप से ही हो पा रही है, जिसमें विकलांग बच्चों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का अभाव एक महत्वपूर्ण कारण है। विश्व जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा विकलांग व्यक्तियों का है, और इससे आर्थिक और सामाजिक रूप से समाज पर प्रभाव पड़ता है। भारत में भी लगभग आठवां हिस्सा विकलांग वर्ग का है। इसलिए, विकलांग बच्चों को उन्नति के पर्याप्त अवसर देना महत्वपूर्ण है ताकि वे समाज और राष्ट्र के उन्नति में योगदान कर सकें। भारतीयशिक्षा आयोग ने विकलांग बच्चों के लिए विशेष शिक्षा की आवश्यकता को समझते हुए विकलांग छात्रों को सामान्य विद्यालयों में पढ़ाई करने का प्रोत्साहन देनेके लिए विभिन्न योजनाएं शुरू की हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में भी शिक्षा के क्षेत्र में समानता के लिए शिक्षा को एकीकृत करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। इसके बावजूद, विकलांग बच्चों की शिक्षा में सकारात्मक दृष्टिकोण की कमी और अन्य कई कारणों के कारण, इस उद्देश्य की पूर्ति में आगे भी कई चुनौतियां हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूति

विशिष्ट शिक्षा की ऐतिहासिक जड़ें मुख्यतः 18वीं सदी के पूर्व में दिखाई देती हैं। उस युग में समकालीन शैक्षिक प्रणाली में विशिष्ट बच्चों के लिए भी ध्यान दिया जाता था। विशिष्ट शिक्षा में आज के कई मुद्दे उस समय भी उठे थे। उस समय का इतिहास दिखाता है कि अपंग व्यक्तियों के साथ सामाजिक जुड़ाव का प्रारम्भिक इतिहास अंधविश्वास और गलत धारणाओं पर केंद्रित रहा। प्रारंभिक दस्तावेज इसे दर्शाते हैं कि अपंग बच्चों को ईश्वर के श्राप के रूप में देखा जाता था। 1800 से 1900 के बीच, यूरोप और अमेरिका में जो संस्थानिक आंदोलन चला, वह मात्र अपंग लोगों की जरूरत पर शिक्षाविद, स्वास्थ्यकर्मी, और जनता की बढ़ती प्रवृत्ति का प्रतिबिम्ब था। अपंग बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा के प्रयास 1900 के आस-पास किए गए, परंतु इसमें थोड़ी सफलता मिली। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में, मानसिक पिछड़े बच्चे जो स्कूल नहीं जाते थे, इकट्ठे किए गए और एक स्कूल शुरू किया गया, परंतु वे सामान्यतः असफल रहे। शताब्दी के बाद, बुद्धिलब्धि जांच, मानसिक पिछड़ों के स्तर की निश्चितता, आदि के बाद, वे सफल होने लगे। भारत में विकलांगता के क्षेत्र में सबसे पहले ध्यान दिया गया। ब्रिटिश शासन के दौरान, 1942 में अंधत्व के कारण, निवारण और कल्याण हेतु एक समिति का गठन किया गया। इस समिति ने शिक्षा मंत्रालय में अंधत्व पर एक इकाई की सिफारिश की। यह इकाई 1947 में बनाई गई और

कुछ समय बाद ही अन्य प्रकार की विकलांगता वाले बच्चों की शिक्षा के कार्यक्रम को इसमें जोड़ा गया। उस समय शासन ने चार प्रकार की विकलांगता पर ही ध्यान दिया - दृष्टिबाधिता, श्रवणबाधिता, मानसिक पिछड़ापन, और गत्यात्मक असमर्थता। 20वीं सदी के अंतिम 2-3 दशकों में विकलांग बच्चों के लिए समेकित शिक्षा कार्यक्रम का विकास हुआ।

अध्ययन का उद्देश्य: इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का मूल्यांकन करना है और उनके क्षेत्र में सुधार के लिए सुझावित कदमों की प्रस्तुति करना है। यह अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों को पूरा करने का प्रयास करेगा:

1. समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों, शिक्षकों, और प्रधानाध्यापकों की अभिवृत्ति का मूल्यांकन करना।
2. उनकी समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता को मापना।
3. अभिवृत्ति और जागरूकता में किसी भी विस्तार या कमी की खोज करना।
4. समावेशी शिक्षा के प्रति सामाजिक समर्थन के संकेतकों को पहचानना।

अध्ययन का प्रश्न:

क्या शिक्षक समावेशी शिक्षा के लिए अच्छे उपायों का उपयोग कर रहे हैं?

क्या वे छात्रों के साथ सही स्तर पर संवाद कर रहे हैं?

क्या उन्होंने समावेशी शिक्षा के लिए विशेष पाठ्यक्रम विकसित किए हैं?

क्या उनकी शिक्षा में समृद्धि और सामाजिक समरसता की भावना है?

अध्ययन का परिसीमन

इस शोध पत्र का चयन शोध समस्या का कथन बेगूसराय जिले के माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों का समावेशी शिक्षा के प्रति अनुशासन एवं समायोजन का अध्ययनकरने के लिए किया गया है। विद्यालय में समावेशन के आधार पर ही प्रधानाध्यापकों का चुनाव प्रतिदर्श के रूप में किया गया है। कक्षा में समावेशन के आधार पर ही अध्यापकों का चुनाव प्रतिदर्श के रूप में किया गया है।इस शोध पत्र का चयन बिहार प्रदेश के दरभंगा जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के 40 माध्यमिक विद्यालयों का समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करने के लिए किया गया है। विद्यालय में समावेशन के आधार पर ही प्रधानाध्यापकों का चुनाव प्रतिदर्श के रूप में किया गया है।कक्षा में समावेशन के आधार पर ही अध्यापकों का चुनाव प्रतिदर्श के रूप में किया गया है।

शोध विधि

इस अध्ययन में, सर्वेक्षण और अनुसंधानीय विधि का उपयोग किया गया है। संग्रहित डेटा को क्वांटिटेटिव और क्वालिटेटिव विश्लेषण के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा। प्राथमिक और द्वितीय स्रोतों से डेटा को संग्रहित किया जाएगा।

प्रतिचयन

इस अध्ययन के लिए स्तरित यादृच्छिक विधि को ही चुना गया। 40 प्रधानाध्यापक तथा 200 अध्यापकों को जिसने से 20 महिला प्रधानाध्यापक तथा 20 पुरुष प्रधानाध्यापक, 100 महिला अध्यापकों तथा 100 पुरूष अध्यापकों का चयन किया गया है।

उपकरण एवं तकनीक

अनुसंधानकर्ता ने समंक संकलन हेतु समावेशी शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को मापने के लिए दो स्वनिर्मित मापनियों का निर्माण किया। पहली मापनी प्रधानाध्यापकों के लिए तथा दूसरी मापनी अध्यापकों के लिए बनायी गयी। मापनियों का निर्माण लिंकर्ट विधि द्वारा किया गया। सांख्यिकीय तकनीकी दत्तों का विश्लेषण करने के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकी का प्रयोग किया गया।

समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों, की अभिवृति एवं जागरूकता

समावेशी शिक्षा के प्रति प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की जागरूकता का महत्व उन्हें इस उपक्रम के महत्वपूर्ण लाभों और संभावित प्रतिबंधों के बारे में समझाने में है। यह उन्हें समझाने में मदद करता है कि हर छात्र का समावेश और समरसता में योगदान महत्वपूर्ण है। छात्रों को यह समझाने के लिए उन्हें इस प्रकार के उपक्रम के लाभों को बताना जरूरी होता है कि समावेशी शिक्षा से हर छात्र का समावेश होता है, जिससे समाज में समरसता और समानता का बढ़ावा होता है। इससे छात्रों का स्वाभाविक विकास होता है और उन्हें समाज में स्वीकृति का अहसास होता है। समावेशी शिक्षा के माध्यम से हर छात्र का शिक्षा का अधिकार होता है, जो उनकी सामाजिक और शैक्षिक विकास में मदद करता है। इसके साथ ही, उन्हें संभावित अवरोधों के बारे में भी जागरूक करना जरूरी है, जैसे कि स्थानीय समाज या परिवेश में समाजिक स्थितियों और धार्मिक धाराओं के अनुसार असमानता की समस्याएं। सामाजिक परंपराओं और अन्य कारकों के कारण समावेशी शिक्षा को अस्वीकार करने की आशंका। समावेशी शिक्षा के लाभों को साझा करने के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों की आवश्यकता। इस प्रकार के जागरूकता के माध्यम से, छात्रों को समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद मिलती है और उन्हें समाज में समानता और समरसता के प्रति सचेत करती है।समावेशी शिक्षा छात्रों को शैक्षिक दृष्टिकोण से अधिकतम लाभ प्रदान करती है क्योंकि यह उनकी विभिन्नता को समानता के माध्यम से समाधान करने में मदद करती है और उन्हें अधिक उच्च शिक्षा और समाजिक समरसता की दिशा में अधिकारी बनाती है। निम्नलिखित कारणों से समावेशी शिक्षा छात्रों के शैक्षिक दृष्टिकोण को अधिकतम लाभ प्रदान करती है:

1. **सामाजिक समरसता को समझाना**: समावेशी शिक्षा छात्रों को समाजिक समरसता के महत्व को समझाती है और उन्हें अपने समूह और समाज के अन्य सदस्यों के साथ सहयोग और समझौता की आवश्यकता को समझाती है। इससे उनकी सामाजिक और शैक्षिक विकास में सुधार होता है।

2. **व्यक्तिगतकृत शिक्षा**: समावेशी शिक्षा छात्रों को उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और प्रतिबंधों के अनुसार शिक्षा प्रदान करती है। यह उन्हें स्वतंत्रता और स्वाधीनता का अनुभव करने में मदद करता है और उनके शैक्षिक उत्कृष्टता के लिए विशेष उपायों को शामिल करता है।

3. **सामूहिक शिक्षा और सहयोग**: समावेशी शिक्षा में, छात्रों को एक साथ काम करने, सहयोग करने, और अपने पीछे छोड़े साथीगणों की मदद करने का मौका मिलता है। इससे उनकी सामूहिक और सामाजिक कौशल मजबूत होते हैं, जो उनके शैक्षिक दृष्टिकोण को मजबूत बनाते हैं।

4. **समाज में समरसता को बढ़ावा**: समावेशी शिक्षा के माध्यम से, छात्रों को समरसता, सम्मान, और सामाजिक न्याय की महत्वपूर्ण भूमिका को समझाया जाता है। इससे वे अपने शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के साथ-साथ समाज में समरसता को बढ़ावा देने के लिए तत्पर होते हैं।

इन सभी कारणों से, समावेशी शिक्षा न केवल छात्रों के शैक्षिक दृष्टिकोण को अधिकतम लाभ प्रदान करती है, बल्कि उन्हें उच्च शिक्षा और समाजिक समरसता की दिशा में अधिकारी बनाती है।

परिणाम और चर्चा:

सेकर्ड तथा बेकमैन ने मनोवृत्ति को परिभाषित करते हुए कहा है "वातावरण के कुछ पहलुओं के प्रति व्यक्ति के भावों, विचारों तथा अनुक्रिया करने की पूर्व प्रवृत्तियों को मनोवृत्ति कहा जाता है।" इस अध्ययन से हमने यह देखा है कि कुछ शिक्षक समावेशी शिक्षा के प्रति उत्सुक हैं और वे छात्रों के साथ सही स्तर पर जुड़े हुए हैं, अध्ययन के परिणाम उच्चस्तरीय थे। इसमें अधिकांश छात्र, शिक्षक, और प्रधानाध्यापक समावेशी शिक्षा के प्रति सकारात्मक अनुभाव और जागरूकता रखते हैं। हालांकि, कुछ क्षेत्रों में अभिवृत्ति में और सुधार की आवश्यकता है जैसे कि समावेशी शिक्षा के प्रति संगठनात्मक समर्थन और उपकरणों की कमी।

निष्कर्ष:

यह अध्ययन दर्शाता है कि समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूकता और अभिवृत्ति में सुधार की आवश्यकता है। साथ ही, समाज में इस उपक्रम के प्रति समर्थन को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा नीतियों में परिवर्तन की आवश्यकता है। विश्लेषण से ज्ञात प्रतिशत मान से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

i. समावेशी शिक्षा के प्रति शहरी क्षेत्र के प्रधानाध्यापकों के बजाय ग्रामीण क्षेत्र के प्रधानाध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

ii. समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण, निजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के बजाय सरकारी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

iii. समावेशी शिक्षा के प्रति शहरी सरकारी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के बजाय निजी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

iv. समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण क्षेत्र में निजी विद्यालयों में कार्यरत महिला प्रधानाध्यापकों के बजाय पुरुष प्रधानाध्यापको का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

v. समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला प्रधानाध्यापकों के बजाय पुरुष प्रधानाध्यापको का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

vi. समावेशी शिक्षा के प्रति शहरी क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला प्रधानाध्यापकों के बजाय पुरूष प्रधानाध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

vii. समावेशी शिक्षा के प्रति शहरी क्षेत्र के अध्यापकों की बजाय ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

viii. समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के बजाय ग्रामीण निजी विद्यालयों के अध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

ix. समावेशी शिक्षा के प्रति शहरी निजी विद्यालयों के अध्यापकों के बजाय शहरी सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

x. समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण क्षेत्र के निजी विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापकों की बजाय पुरूष अध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

xi. समावेशी शिक्षा के प्रति ग्रामीण क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापकों की बजाय पुरुष अध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

xii. समावेशी शिक्षा के प्रति शहरी क्षेत्र में निजी विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापकों की बजाय पुरूष अध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

xiii. समावेशी शिक्षा के प्रति शहरी क्षेत्र में सरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापकों की बजाय पुरूष अध्यापकों का दृष्टिकोण सकारात्मक पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

इस अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार है -

- सभी के लिए शिक्षा नीति को सफल बनाना।
- समावेशन के माध्यम से सभी को शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना ताकि प्रत्येक बालक अपनी गति व क्षमता के अनुसार बिना किसी बोझ के शिक्षा के मूल्यों का अर्जन कर सके।

- इसके माध्यम से समाज में निःशक्तों को उनका खोया हुआ स्थान प्रदान करा सके।
- शिक्षा के माध्यम् से निःशक्तों को इस योग्य बनाता ताकि वे स्वावलम्बी बन सकें।
- समाज में बढ़ रहे विभिन्न प्रकार के बहिराव (मगबसनेपवद) को रोक सकें।
- समावेशन केवल शिक्षा तक ही सीमित न रहे बल्कि प्रत्येक स्तर पर किया जा सके।
- विद्यालय परिवार और समुदाय समावेशी शिक्षा के प्रति अपनी सही जिम्मेदारी को समझ सके।
- नवीन शिक्षा पद्धतियों का प्रयोग किया जा सके ताकि हाशिये पर स्थित अधिगमकर्ता भी लाभान्वित हो सके।
- प्रत्येक बालक को विशेष समझ कर सामान्य कक्षा में उसका समावेशन किया जा सके और उसे लाभान्वित किया जा सके।

समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा समावेशी शिक्षा से संबंधित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये गएहैं-

- स्कूलों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए राज्य या केंद्र सरकार को अधिक जागरूकता अभियान चलाना चाहिए।
- समावेशी शिक्षा के लिए विद्यालय प्रबंध समिति और प्रधानाचार्य को विशेष प्रयास करना चाहिए।
- समावेशी शिक्षा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
- शिक्षा से जुड़े प्रत्येक घटक को समावेशी शिक्षा की मूल अवधारणाओं की आवश्यक जानकारी देनी चाहिए।
- सभी विद्यालयों की बनावट इस आधार पर होनी चाहिए कि किसी को भी उसमें आवागमन की परेशानी न हो।
- निःशक्त व्यक्ति अधिनियम 1995 की जानकारी सामान्य लोगों को होनी चाहिए, और उन्हें इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।
- सामुदायिक स्तर पर समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त योजनाओं का निर्माण किया जाना चाहिए और उन्हें लागू किया जाना चाहिए।
- समावेशी शिक्षा का पालन करने वाले विद्यालयों की प्राथमिकता क्रमानुसार उन्हें पुरस्कृत किया जाना चाहिए। विद्यालय प्रबंधन को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि समावेशी शिक्षा की ओर रुझान बढ़ाया जा सके।
- विद्यार्थियों को भी समावेशी शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपिल, एच.के. (2009) अनुसंधान विधियां, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा
2. कोल, लोकेश (2008) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
3. गर्ग, सरिता (जनवरी 2005) भारतीय आधुनिक शिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
4. गुप्ता, एस. एवं अग्रवाल, जे.सी. (2009) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं विशिष्ट आवश्यकताओं वाले अधिगमकर्ता, शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली

5. झा, मदन मोहन (2003) समावेशी शिक्षा, दृष्टिकोण और प्रक्रियाएँ, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
6. ढोढयाल, फाटक (1972) अनुसंधान की विधि शास्त्र, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, बेगूसराय
7. पांडेय, केपी. (2008) शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर मीनाक्षी (2010) शैक्षिक अनुसंधान, इंटरनेशनल पब्लिशिक हाउस, मेरठ
9. शर्मा, आर.ए. (2009) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
10. सिंह, अरुण कुमार (2009)मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधिया, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली
11. सिह, रामपाल व शर्मा, ओ.पी. (2008) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
12. राष्ट्रीय पादयमर्या की रूपरेखा 2005 एनसीईआरटी नई दिल्ली
13. कपिल एच के. (2009) अनुसंधान विधिया, एचपी भार्गव बुक हाउस, आगरा
14. कोल, लोकेश (2008) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
15. गर्ग, सरिता (जनवरी 2005) भारतीय आधुनिक शिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
16. गुप्ता, एस.एवं अग्रवाल, जे.सी. (2009) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं विशिष्ट आवश्यकताओं वाले अधिगमकर्ता, शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
17. झा, मदन मोहन (2003) समावेशी शिक्षा, दृष्टिकोण और प्रक्रियाएँ, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
18. ढोंढयाल, फाटक (1972) अनुसंधान की विधि शास्त्र, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, बेगूसराय
19. पांडेय, के.पी. (2008) शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
20. भटनागर, आर.पी. एवं भटनागर, शैक्षिक अनुसंधान, इंटरनेशनल पब्लिशिंक हाउस, मेरठ मीनाक्षी (2010)
21. शर्मा, आर.ए. (2009) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
22. सिंह, अरूण कुमार (2009) मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
23. सिंह, रामपाल व शर्मा, ओ. पी. (2008) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
24. राष्ट्रीय पाठ्यचयों की रूपरेखा 2005 एनसीईआरटी, नई दिल्ली
25. UNESCO. (2019). "Inclusion in Education: Issues Paper."
26. Sharma, R. K., & Gupta, A. (2020). "Inclusive Education in India: Progress and Challenges.